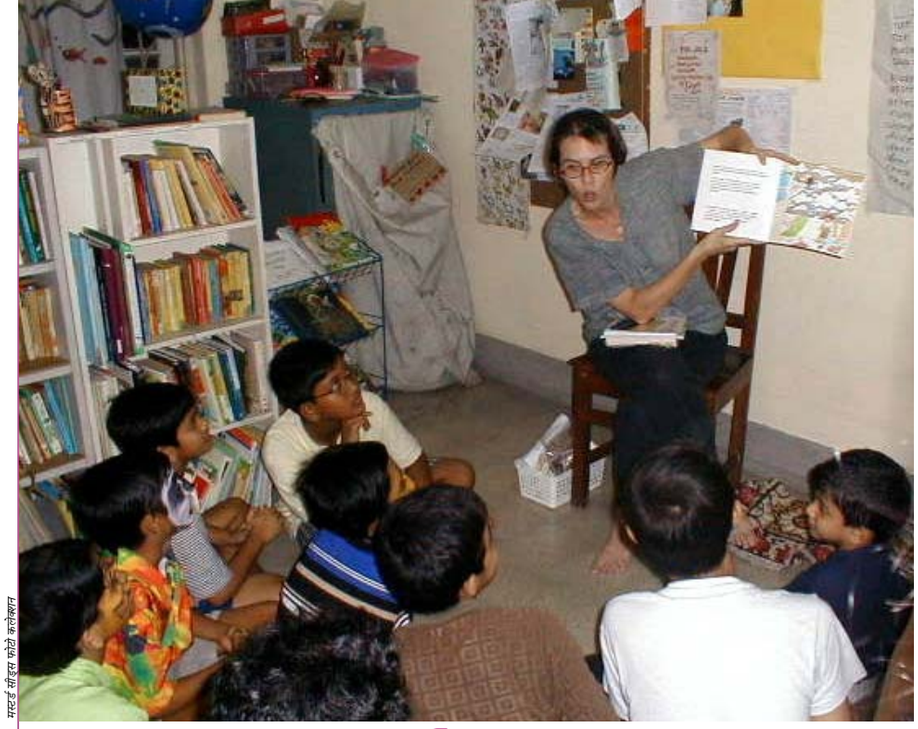

मॉरा हर्ली के घर पर बच्चों के साथ

मॉरा हर्ली

बचपन को संवारने की कोशिश

रंजीता विश्वास

सरसों बंगाली भोजन का लोकप्रिय अंश है। गर्म सरसों के तेल में सरसों के दाने छोड़ने पर उठी स्वाद-सुगंध की लपट के क्या कहने। और इन्हें पीस कर बनी चटनी हिल्सा मछली के रसे के स्वाद को अद्भुत बना देती है। मुझे लगा बंगाल में व्याप्त सरसों की इसी महिमा से प्रेरित हो कर बंगाली पुरूष से ब्याह करके कोलकाता में आ बसी मॉरा हर्ली ने अपने छोटे से घरेलू पुस्तकालय का नाम ''मस्टर्ड सीड्स'' रखा है। लेकिन उन्होंने स्पष्ट किया कि उनके लिए इस नाम का अर्थ और महत्व कहीं अधिक गहरा है। ''मैं मानती हूं कि बच्चे बीजों की तरह हैं। अगर हम शांति और सहअस्तित्व जैसी चीजों से बचपन में ही उनका परिचय करा दें तो वे उनके जीवन में सार्थक विकास को प्रेरित करेंगी।''

जापान से अपने जैव-भौतिकीविद पति गौतम बसु के साथ कोलकाता के साल्टलेक इलाके में आ बसने पर सुश्री हर्ली ने पाया कि उनके आसपास कोई ऐसा पुस्तकालय नहीं है जहां छोटे बच्चे एक खुले, सुखद वातावरण में किताबों का आनन्द पा सकें। अमेरिका में सामुदायिक पुस्तकालय सब जगह उपलब्ध हैं, जापान में भी उन्होंने क्योतो में रहने के दौरान घरों में ''बंको'' या जेबी पुस्तकालय देखे थे। खुद उनके पास भी काफ़ी पुस्तकें थीं और फिर उनकी बहनें भी उनके नन्हे बेटे-बेटी को उपहार में पुस्तकें भेजती रहती थीं। ''मैं चाहती थी कि मेरे बच्चे दूसरे बच्चों के साथ मिलकर इनका आनन्द उठाएं।'' आखिर आठ साल पहले मॉरा ने मस्टर्ड सीड्स की शुरूआत की। बच्चों की स्कूली व्यस्तता को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तकालय (सदस्यगण इसे क्लब कहते हैं) रविवार की सुबह भी खुला रहता है और इसकी सदस्यता नि:शुल्क है।

सच पूछें तो मस्टर्ड सीड्स सचमुच ही एक क्लब है जहां मुहल्ले के अलग-अलग आयु वर्गों के बच्चे कई तरह गतिविधियों में शामिल होते हैं। सुश्री हर्ली बताती हैं,'' क्लब में प्रवेश करते ही आप उसके सदस्य बन जाते हैं। यह खासा अनौपचारिक मामला है, कई बार बच्चों के साथ शहर के दूसरे हिस्सों से भी बच्चे आ जाते हैं लेकिन ज़्यादातर बच्चे हमारे इलाके से आते हैं।

मस्टर्ड सीड्स में बच्चे सिर्फ पढ़ते ही नहीं हैं, वे तस्वीरें भी बनाते हैं, जिग्सॉ पज़ल से सिरखपाई भी करते हैं। दीवारों पर बच्चों की कलाकारी के नमूने टंगे हैं, पृथ्वी दिवस पर हुई एक प्रतियोगिता के लिए उनकी बनाई और डिज़ाइन की हुई टी-शर्टों के चित्र भी लगे हैं। सुश्री हर्ली को लगता है कि इन गतिविधियों में शामिल होकर बच्चे पर्यावरण संरक्षण जैसी चीज़ों को समझेंगे और ज़िम्मेदार नागरिक बनेंगे। रिकू, आलॉकॅन, शुभजीत, तियाशा गर्व से खुद चित्रित किए अपने किताबों के झोले दिखाते हैं। मस्टर्ड सीड्स का अपना अनियतकालीन न्यूज़लेटर भी है।

बच्चों को ''मॉरा आन्टी'' प्रयोग और अन्वेषण की पूरी छूट देती हैं। बहुत गर्म दिनों में बच्चे फुहारे के नीचे तरबतर भी होते हैं। ''क्यों न हों?'' सुश्री हर्ली पूछती हैं। वह बताती हैं, ''मेरे बच्चे अक्सर पूछते थे कि हम सड़क पर घूमते बच्चों की तरह बारिश में क्यों नहीं नहा सकते. यह बच्चों के बहुत सीधेसादे सुख हैं और मुझे लगता है इन मामलों में सख्ती नहीं करनी चाहिए।''

मस्टर्ड सीड्स की करीब 500 पुस्तकें तमाम तरह के विषयों पर हैं-खूबसूरत चित्रों वाली किताबों से लेकर हैरी पॉटर के कारनामों तक। सुश्री हर्ली जब भी अमेरिका जाती हैं उनकी कोशिश रहती है कि मस्टर्ड सीड्स के लिए ज़्यादा से ज़्यादा पुस्तकें जुटा ली जाएं। वह गैरेज सेल्स को बहुत उपयोगी पाती हैं, ''कभी-कभी सार्वजनिक पुस्तकालय भी कौड़ियों के दाम पर पुस्तकें निकालते हैं। फिर अमेरिकी डाक व्यवस्था की एम-बैग सेवा वाजिब दाम पर ढेर सारी किताबें और मीडिया सामग्री पहुंचा देती है।'' उनके भाई-बहन और मित्र भी उन्हें किताबें भेजते रहते हैं।

सुश्री हर्ली एक स्वंयसेवी संस्था की अनौपचारिक पाठशाला में अंशकालीन अध्यापन भी करती हैं और बांग्ला में अपना हाथ तंग होने को लेकर खुद से नाराज रहती हैं। दरअसल अपने मुहल्ले के बच्चों से संवाद स्थापित करने में भाषा इतनी आड़े नहीं आती- बच्चे ठीकठाक अंग्रेजी समझ लेते हैं और उनको ठीकठाक बांग्ला आती है। ''लेकिन मेरी पाठशाला के बच्चे झोंपड़पट्टी से आते हैं और सिर्फ बांग्ला बोलते-समझते हैं। अब मैं खांटी बांग्ला सीखने में जुटी हूं। उनके साथ काम करना मुझे अच्छा लगता है।''

गरीब स्त्रियों को हस्तशिल्प के माध्यम से आय उपलब्ध करवाने वाले एक स्वंयसेवी संगठन के साथ जुड़कर सुश्री हर्ली की कलात्मक अभिरुचि को अभिव्यक्ति मिली। बंगाल के मेदिनीपुर जिले की पारंपरिक पटचित्र शैली में उनकी गहरी रुचि है। ''यह केवल रंगों और रेखाओं का खेल नहीं है, पूरा समुदाय इससे जुड़ा है। पीढ़ियों से चली आ रही इस कला का आधुनिक कला से भी तालमेल बैठ सकता है।'' उनको लगता है कि एशियाई लोककलाओं और शिल्पों को पश्चिम में प्रस्तुत करते हुए कलाकारों और शिल्पकारों पर भी प्रकाश डालना ज़रूरी है,'' उदाहरण के लिए पटचित्र के चित्रकार हर दृश्य का वर्णन करते कथा को गा-गाकर सुनाते हैं। यह एक पूरा प्रदर्शन है जिसमें आख्यान, संगीत, चित्र तीनों का बराबर महत्व है। इसे इसी तरह प्रस्तुत भी किया जाना चाहिए।''

एशियाई कला के प्रति सुश्री हर्ली का लगाव एशिया में रहने का परिणाम मात्र नहीं है। मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में पढ़ते हुए उन्होंने दर्शन और एशियाई अध्ययन के अलावा जापानी भाषा का भी अध्ययन किया। एशिया में वह सहज अनुभव करती हैं। ''हां कुछ पर्वों पर मुझे अपने अमेरिकी परिवार की कमी खलती है लेकिन मैं नियमित रूप से अपने घर जाती हूं। यहां मुझे अच्छा लगता है और फिर मेरे बच्चों को पता है कि यह उनका घर है।''

बांग्ला में टिकटिकी का अर्थ छिपकली है,। वह कहती हैं, ''ओह, मुझे यह अच्छी लगती है। छिपकली कमाल का जीव है। वह दीवार से चिपकी, ऊंचाई पर से हमारे संसार को देखती रहती है। मेरा ब्लॉग ''छत से चिपकी छिपकली'' की निगाह से दिखा कोलकता और उसके रोज़ बदलते रंगों का विवरण है। उनके लेखन के नमूने ब्लॉग *http://tik-tiki.blogspot.com/* पर देखे जा सकते हैं।

***रंजीता विश्वास** कोलकाता स्थित स्वतंत्र पत्रकार हैं। वह साहित्यिक सामग्री का अनुवाद करती हैं और कहानियां भी लिखती हैं।*

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का विचार पहलेपहल उन्नीसवीं सदी के अंतिम दौर में उन दिनों सामने आया जब बढ़ते औद्योगिकीकरण के बीच काम करने की स्थितियों को लेकर विरोध के स्वर उभर रहे थे। 8 मार्च 1857 को न्यूयॉर्क सिटी में ऐसा ही एक विरोध प्रदर्शन कपड़े और सिलाई के कारखानों की स्त्री मज़दूरों ने किया। दो साल बाद मार्च के महीने में उन्होंने अपने पहले मज़दूर संघ की स्थापना की।

आगामी वर्षों में 8 मार्च के दिन और भी विरोध प्रदर्शन होते रहे जिनमें से सबसे उल्लेखनीय 1908 का प्रदर्शन था जब काम के घंटों और वेतन में सुधार और मतदान के अधिकार की मांग करते हुए 15,000 स्त्रियों ने न्यू यॉर्क सिटी में जलूस निकाला।

कॉपिनहेगन, डेनमार्क में सोशलिस्ट इंटरनेशनल के एक अधिवेशन में स्त्रियों के अधिकार के आंदोलन को सम्मानित करने और स्त्रियों के लिए मतदान का अधिकार प्राप्त करने के लिए अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया लेकिन इसकी कोई तिथि नियत नहीं की गई। 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया और संयुक्त राष्ट्र ने 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन शुरू कर दिया।

इस वर्ष अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आयोजन का विषय है, ''स्त्रियों और बालिकाओं के प्रति हिंसा का अंत।'' 8 मार्च को स्त्रियों को प्रेरित करने और उपलब्धियों को सम्मानित करने के लिए हजारों आयोजन होते हैं। यह सार्थक बदलाव के लिए एकजुट होने और मेलजोल बनाने का एक अवसर है।